भाग ६

मुट्ठीभर कहानियाँ

औरंगाबाद महानगरपालिका, औरंगाबाद

समग्र शिक्षा अभियान-शिक्षण विभाग

संवाद...

महानगरपालिकेच्या शाळांमधील शिक्षकांच्या सर्जनशिलतेला आवाहन करुन त्यांच्यातील प्रतिभा कथारूप पुस्तकाच्या निमित्ताने आपल्यासमोर ठेवतांना मला मनस्वी आनंद होत आहे.

कथा या विद्यार्थी व शिक्षकांचे भावविश्व उमलवू शकते. कथा सांगतांना शिक्षक व विद्यार्थी भेद विसरुन एकाच भावनिक पातळीवर स्थिरावतात. आनंद, सुख, दु:ख, भीती, त्याग, बंधुभाव, निष्ठा, प्रेम इ. भावना ते एकाचवेळी समरसून अनुभवतात. वर्गाध्यापनाच्या दृष्टीने आपला परंपरेने चालत आलेला हा ठेवा अतिशय महत्वाचा आहे. विद्यार्थ्यांचा शब्दसाठा वाढवणे, वाक्यरचना शिकवणे, भावना व्यक्त करणे, श्रवण, संभाषण या कला विकसित करणे यासाठी कथा हे माध्यम मध्यवर्ती भूमिका बजावते.

सर्व शाळा प्रगत करणे व गुणवत्ता विकास करणे हे महाराष्ट्र शासनाचे धोरण आहे. शिक्षकांमधल्या अंत:स्फूर्तीला, नवनिर्माण क्षमतेला नवे क्षितिज उपलब्ध करुन देणे आवश्यक आहे. तसेच ज्या शिक्षकांच्या क्षमतेवर गुणवत्तेचा रथ ओढावयाचा आहे ती विकसित करणेही गरजेचे आहे. ही बाब ओळखून म.न.पा. आयुक्त, मा. डॉ. निपुण विनायक तसेच श्रीमती डॉ. निधी विनायक यांच्या प्रेरणेमधून 'मुठभर गोष्टी' हा कथासंग्रहाचा उपक्रम साकार होत आहे. मराठी, हिंदी, इंग्रजी आणि उर्दू भाषेतून कथा लिहिल्या आहेत. शिक्षकदिनी या पुस्तकाचे विमोचन करुन सर्व कथालेखक शिक्षकांचा सत्कार करत आहोत. हा आमचा पहिलाच उपक्रम असल्यामुळे आपण निदर्शनास आणून दिलेल्या सूचनांचे भविष्यात स्वागत राहील.

या कामी सहकार्य करणारे साहित्यिक श्रीमती डॉ. लीला शिंदे, प्रा. डॉ. दासू वैद्य, श्री. उद्धव भयवाळ, डॉ. विशाल तायडे, श्री. अबु बकर रहेबर, श्री. संजय कुलकर्णी यांचे विशेष आभार.

श्रीकांत कुलकर्णी,
शिक्षणाधिकारी

प्रेरणा व संकल्पना
डॉ. निपुण विनायक, (भा.प्र.से.)
आयुक्त, म.न.पा. औरंगाबाद
डॉ. श्रीमती निधी विनायक

मुद्रक :
ड्रीम्स् प्रिंट ॲण्ड पॅक
एम.आय.डी.सी. चिकलठाणा,
औरंगाबाद. मो. 8888888011

प्रकाशक :
श्रीकांत कुलकर्णी
शिक्षणाधिकारी,
म.न.पा. औरंगाबाद

मुखपृष्ठ संकल्पना
श्री. ज्ञानेश्वर असोलकर
(कलाशिक्षक)
श्री. विनोद भोरे
(कलाशिक्षक)

विशेष सहाय्य :
ज्ञानदेव सांगळे
स.का.अ.म.न.पा.
संजीव सोनार प्र.सां.अ.

परिक्षक तथा मार्गदर्शक समिती
श्रीमती डॉ. लीला शिंदे
प्रा. डॉ. दासू वैद्य
डॉ. विशाल तायडे
श्री. उद्धव भयवाळ
श्री. अबू बकर रहेबर
श्री. संजय कुलकर्णी

मुट्ठीभर कहानियाँ

भाग ६

औरंगाबाद महानगरपालिका
शिक्षण विभाग

अनुक्रमणिका

1. कुत्ता और चिटियाँ.....1

2. शेर और सियार.....4

3. अनोखी दोस्ती 7

4. The Grumpy King 11

5. Who is Better ? 13

6. The Big Bet 15

7. The Sad Ugly Tree 17

8. King Bahubali 19

9. The Leather Shoes 21

10. Python and Rama 23

11. Plastic Ban.....26

कुत्ता और चीटियाँ

एक घर में एक पालतू कुत्ता रहता था । वह बहुत आलसी था । एक जगह पर ही बैठा रहता था । मालिक के रोटी देने पर वह रोटी खाता और सो जाता । थोड़ी देर बाद उठता और फिर एक ही जगह पर बैठ जाता । कभी कभी मालिक उस कुत्ते को घुमाने के लिए बाहर लेकर जाता था ।

उसी घर के पीछे चीट्टियाँ भी रहती थीं । वे चीटियाँ बहुत मेहनती थीं । सुबह होते ही वे खाने के लिए सामान लाने के लिए निकलती । कुछ समय बाद अनाज, शक्कर के दाने आदि लेकर घर लौटतीं । चीटियों की हर रोज़ की कमाई करके पेट भरने की आदत देखकर कुत्ते को बहुत हँसी आती थी । उसे लगता था कि वह बहुत किस्मत वाला है, जो उसे कुछ किए बिना खाना मिलता है । कुत्ता चीटियों को चिढ़ाता था । उन्हें परेशान करता था । एक दिन कुत्ते ने कुछ चींटियों को पैरों के नीचे रौंदकर मार डाला । बची हुई चीटियाँ अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग गइ ।

वे अपने घर पहुँची और रोने लगीं । चीटियाँ आपस में बातें करने लगीं । एक चींटी ने कहा कि हम उस कुत्ते को समझाँएगे कि यह रास्ता हमारा हररोज़ के आने – जाने का है । लेकिन कुछ डरने लगी । उन्होंने कहा कि अगर फिर से उस कुत्ते ने हम पर हमला किया तो हम अपनी जान खो बैठेंगे । फिर भी उन में से पाँच चीटियों ने हिम्मत जुटाई और कुत्ते के पास जाकर उससे विनती की ।

सबसे बड़ी चींटी ने कहा ''कुत्ते भैया, हमारा पेट भरने के लिए हम अनाज के टुकड़े और शक्कर के दाने इस रास्ते से लेकर जाते हैं । आप हमें चिढ़ाओ मत और हमें पैरों के नीचे मत रौंदो । कुत्ता ज़ोर–.जोर से हँसने लगा । उसने उनकी बात नहीं मानी । चीटियाँ उदास हो कर वहाँ से चली गई । घ र पहुँचकर उन्होंने सबसे कहा ''यह कुत्ता ऐसे नही मानेगा । इसे हमारी एकता का पूरा उपयोग करके सबक सिखाना होगा ।''

फिर सभी ने मिलकर कुत्ते पर हमला करने की योजना बनाई ।

सुबह होने से पहले सभी चीटियाँ अपने घर से निकलीं । कुत्ता घर के बाहर सो रहा था । सभी चींटियों ने मिल कर कुत्ते की पूँछ को ज़ोर–ज़ोर

से काटना शुरू किया । कुत्ता चिल्लाते हुए नींद से जाग गया । उसे बहुत तकलीफ होने लगी । आखिर में उसने सभी चीटियो से माफी मांगी और उनको तकलीफ न देने का वादा किया । चीटियों ने उसे माफ कर दिया ।

अब चीटियाँ पहले की तरह अनाज के टुकड़े और शक्कर के दाने लाने के लिए उसी रास्ते से बिना डरे आने-जाने लगीं । कुत्ते ने भी उनको फिर कभी तंग नही किया ।

श्री. अग्रवाल मनोज प्रकाश
सहशिक्षक, मनपा. प्राथमिक
माध्यमिक विद्यालय हर्सूल, (गाव) मराठी, औरंगाबाद.

शेर और सियार

हिमालय के जंगलो में एक बहुत ताकतवर शेर रहता था । एक दिन उसने बारासिंघे का शिकार किया और खाने के लिए अपनी गुफा मे लेकर जाने लगा । तभी एक सियार उसके सामने साष्टांग दंडवत प्रणाम करता हुआ उसके गुणगाण करने लगा ।

उसे देख शेर ने पूछा , ''अरे ! तुम यह क्या कर रहे हो ?''

सियार बोला ''हे जंगल के राजा, मैं आपका सेवक बनकर अपना जीवन धन्य करना चाहता हूँ । कृपया मुझे आपनी शरण में ले लीजिए और अपनी सेवा करने का अवसर प्रदान कीजिए ।

शेर समझ गया कि सियार का असल मकसद उसका बचा हुआ शिकार खाना है । पर शेर ने सोचा कि चलो उसके साथ रहने से मेरा क्या जाता है । यह मेरा छोटा–मोटा काम ही कर दिया करेगा । यह सोच शेर ने सियार को अपने साथ रहने की अनुमती दे दी ।

उस दिन के बाद जब भी शेर शिकार करता, सियार भी उसके साथ भर पेट भोजन करता । समय बीतता गया । रोज मांस खाने से सियार की ताकत भी बढ़ गयी । उसे अपनी ताकत पर घमंड होने लगा । इसी घमंड मे अब वह जंगल के जानवरों पर रौब झाड़ने लगा । एक दिन तो उसने हद कर दी ।

उसने शेर से कहा ''आज तुम आराम करो । मै शिकार करुंगा और तुम मेरा छोड़ा हुआ मांस खाओगे ।''

शेर को सियार की बात पर बहुत गुस्सा आया । अपने गुस्से पर काबू करते हुए वह बोला, ''यह तो बडी अच्छी बात है । आज मुझे भैंसा खाने का मन है, तुम उसी का शिकार करो ।''

सियार तुरंत भैंसों के झुण्ड की तरफ निकल पड़ा, और दौडते हुए एक बड़े से भैसें पर झपटा । भैंसा सावधान था । उसने तुरंत अपने सींग से सियार को उठाया और दूर पटक दिया ।

सियार की कमर टूट गयी । वह किसी तरह घिसटते हुए शेर के पास पहुँचा ।

''क्या हुआ, भैंसा कहाँ है ?'' शेर बोला

''हुज़ूर मुझे क्षमा कर दीजिए । मैं बहक गया था और खुद को आपके बराबर समझने लगा था ।'' सियार गिड़गिड़ाते हुए बोला ।

शेर ने सियार को माफ कर दिया । फिर दोनों मिलकर एक साथ रहने लगे ।

शर्मा कैलास ज.
सहशिक्षक, मनपा. प्राथमिक
शाळा पडेगाव कॉलनी

अनोखी दोस्ती

सुशांतबाबू नाम के एक अफसर थे । उनके घर में एक चुहिया रहती थी । सुशांतबाबू जब दफ्तर जाते, तब चुहिया घर में रखे हुए अनाज के दानों से अपना पेट भरती थी। शाम को जब सुशांतबाबू घर आते, तब चुहिया छिप जाती थी ।

एक दिन सुशांतबाबू कुछ दिनों के लिए दूसरे शहर चले गए । हमेशा की तरह चुहिया खाने के लिए अनाज के दाने ढूँढने लगी । पहले तो उसे अनाज के कुछ दाने मिल गए । लेकिन एक-दो दिन बाद उसे कुछ न मिला । नीचे गिरा हुआ सारा अनाज खत्म हो गया था । उसकी भूख बढ़ने लगी और वह अस्वस्थ होने लगी ।

उसी दिन दोपहर में एक बिल्ली खिड़की से सुशांतबाबू के घर में आने की कोशिश करने

लगी । जैसे ही उसने उँची वाली खिड़की से छलांग मारी, उसका पैर मुड़ गया और वह टूटे हुए काँच पर गिर गई । वह दर्द से कराहने लगी । चलते समय उसे बहुत दर्द हो रहा था ।

घर में आने के बाद बिल्ली एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने लगी । वही पर चुहिया अनाज ढूँढ रही थी । वह जल्दी से अलमारी के पिछे छिप गई । फिर धीरे से अपना मुँह बाहर निकाल उसने बिल्ली को देखा। बिल्ली दर्द से कराह रही थी । चुहिया बाहर निकली और बिल्ली की ओर बढ़ी । पास जाने पर उसे समझ आया कि बिल्ली के अगले दो पावों पर जख्म है । चुहिया ने जल्द ही घर में पड़ा हुआ एक कपड़ा लिया और बिल्ली के जख्म को पोंछा । फिर दूसरे कपड़े को दातों से फाड़ कर बिल्ली के जख्म पर उसे बांध दिया । अब बिल्ली को अच्छा लग रहा था । वह थोड़ी देर तक वहाँ पर सो गई । चुहिया फिर खाना ढूँढने के काम में लग गई । उसे गेहूँ के डिब्बे के पास कुछ दाने मिले । वह आराम से खाते हुए बिल्ली के नींद से जागने का इंतजार करने लगी ।

थोड़ी देर बाद बिल्ली ने आँखे खोली । उसने देखा कि चुहिया उसके सामने बैठी हुई है । बिल्ली ने चुहिया को धन्यवाद दिया और कहा ''तुमने मेरे दुख में मेरी मदद की है । तुम्हारा यह उपकार मैं, कभी नही भूलुँगी।

चुहिया, ने मुस्कराते हुए जवाब दिया'' ''तुम्हारा दर्द से भरा चेहरा

देखकर मुझसे रहा नहीं गया। इसलिए मैंने तुम्हारी मदद की ।''

बिल्ली और चुहिया की बातें चल रही थीं, तभी दरवाजा खुलने की आवाज़ आई । सुशांतबाबू शहर से वापस आ गए थे । दरवाज़े की आवाज़ सुनकर चुहिया छिप गई और बिल्ली खिड़की से भाग गई । घर में आने के बाद सुशांतबाबू ने देखा कि घर में कुछ फटे हुए कपड़े और काँच फर्श पर पड़े है । उन्हें लगा कि घर में कोई है । उन्होनें घर का हर एक कोना देखा तो समझ आया कि यह किसी चुहिया ने किया है ।

उन्होंने दूसरे ही दिन बाज़ार से चूहे को पकड़ने वाला पिंजरा लाया । पिंजरे मे अनाज के दाने डाले । चुहिया जब अनाज के दाने ढूँढने के लिए पिंजरे में गई, वह पिंजरे में फँस गई ।

तभी सुशांतबाबू ने खिड़की पर बैठी बिल्ली को देखा और तय किया कि पिंजरे में फँसी हुई चुहिया को बिल्ली के मुँह में दिया जाए । यह सोचकर उन्होंने पिंजरा बिल्ली के सामने रखकर पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया । चुहिया जब पिंजरे के बाहर आयी तो उसने बिल्ली को देखा और वह डर गयी । चुहिया को देखते ही बिल्ली समझ गई कि यह वही चुहिया है जिसने उसको ज़ख्मी होने पर मदद की थी । बिल्ली ने चुहिया को कुछ भी नही किया । चुहिया ने भी अब तक बिल्ली को पहचान लिया था । उस का डर नौ-दो ग्यारह हो गया था । दोनों एक दूसरे के गले लग गए ।

बिल्ली और चुहिया का अनोखा बर्ताव देखकर सुशांतबाबू अचरज में पड़ गए । बिल्ली और चुहिया की दोस्ती देखकर उन्होंने तय किया कि वे दोनों को अपने घर में रहने के लिए जगह देंगे ।

अब सुशांतबाबु बिल्ली के लिए हर रोज़ दूध और चुहिया के लिए तरोताज़ा अनाज लाने लगे । तीनों घुलमिलकर रहने लगे ।

श्री. अग्रवाल मनोज प्रकाश
सहशिक्षक, मनपा. प्राथमिक
माध्यमिक विद्यालय हर्सूल, (गाव) मराठी, औरंगाबाद.

The Grumpy King

Once there lived a grumpy king. He was always angry and never used to laugh. He also did not allow anyone else in the kingdom to laugh.

One day, a small boy decided the make the king laugh. He wrote a funny story and made it into a drama.

Then he went to the palace and asked the king, "May I present my drama to you ?"

The king let him do it. The boy started the play. In the end, when he came to the funniest part of the story, the king started laughing. All the people present in the court were amazed. Seeing the king laugh, everybody also began to laugh. The king never got angry after that.

- Mrs. Sulakhe Neelima Datatray

AMC High School, Begumpura

Who is Better ?

Once there lived a rabbit and a tortoise in a jungle. One day they got into an argument on who is better. So, they decided to have some competitions.

First the rabbit decided to have a running competition. He hopped quickly on long legs whereas the tortoise couldn't even walk properly. The rabbit won the race easily.

Next time the tortoise chose swimming competition. He swam across the river easily while the rabbit could not

even jump in water. The tortoise won the swimming competition easily.

They started laughing. They realised that both of them were unique and there was no need for them to compare themselves with each other. They became good friends after that.

- Horkekar S. R.

AMC High School, Ashoknagar

The Big Bet

Once there was a big forest. In the forest lived two crows namely Golu and Dholu.

One day they had an argument about who is better. Golu said, "I am superior to you because I am strong and healthy".

Dholu replied, "I am superior because I am elder and have more experience".

Both of them did not agree with each other.

They decided to have a bet. Golu said, "Let us

carry a sack in our beak. Whoever carries it higher in the sky would win."

Dholu agreed and they decided to carry a sack each. Golu was cunning. He took a sack filled with cotton and gave a sack full of salt to Dholu. As cotton is lighter than salt, Golu managed to fly high in the sky but Dholu couldn't.

Meanwhile it started to rain. Golu's cotton sack soaked water and become heavy. Dholu's sack became lighter as the salt dissolved in the rain and got washed away. Thus Dholu won the bet.

At last Golu realised that if he had not cheated he would have won. He felt really bad and decided never to cheat again.

- Horkekar S. R.

AMC High School, Ashoknagar

The Sad Ugly Tree

Once there was a big jungle on the bank of a river. A lot of animals lived there.

All animals used to come to the river to drink water and take rest in the shadow of trees nearby. Birds & animals like monkeys used to play on the branches.

On the bank of that river there was an ugly tree. The beautiful trees near him used to make fun of his looks. The ugly tree became very

unhappy. He thought that because of my ugliness no animal comes near me to rest or play.

One day a woodcutter came to the forest for wood. He saw the ugly tree and thought that this tree was not of any use. It would be better to instead cut the beautiful trees nearby. So he cut all the beautiful trees around and went back home with lots of wood. On seeing this the ugly tree realized that being beautiful is not the most important thing. He never complained about his looks again.

- Horkekar S. R.

AMC High School, Ashoknagar

KING BAHUBALI

Once upon a time, there was a king named was Bahubali. He was a very brave king. One day while going through the jungle, he noticed an old woman lying on the ground. She was injured and crying for help. King Bahubali felt sorry for her. He gave water to her and took her along with him to his palace.

In the palace, he took care of the old woman. He asked the doctors to give her the best treatment. Very soon the old woman became healthy and fine.

One day the king was feeling very sad. The old woman asked the king why he was sad. He

replied that his wife, Queen Devsena, was very sick and all the doctors were unable to treat her. She was going to die.

The old woman knew of a herbal medicinal soup which could cure the queen. She made the soup and gave it to the queen every day. In a few weeks, the queen started becoming better and soon she was cured. King Bahubali was very happy that his wife had became healthy. He thanked the old woman. She said," King, there is no need to thank me. You also saved my life once."

Ganesh Bhanudas Niwalkar

AMC P.S. Kanchanwadi

The Leather Shoes

Long long ago there was a king who was very kind and generous. He always worried about his kingdom and his people. He wanted to know about them and their problems.

One day the king decided to go in disguise to meet his people and know their problems. He with his ministers went out without horses or carriage. He decided to travel by foot to different places of worship. He met many people but he was really surprised that he could get only a handful of people who had problems. He came back to his palace very happy.

He was satisfied to see that his people were happy and his kingdom was prosperous.

After some time the King felt intolerable pain in his feet. He thought about it and realised that the roads of his kingdom were not comfortable.

He felt sad for the people who had to walk long distance everyday. Thinking about them, he ordered his ministers to cover all the roads with leather. That way it wouldn't be painful for the people to walk long distance.

The ministers were shocked to hear the kings order. They got worried. To cover the roads, they would need huge amount of leather, which means thousands of animals had to be killed. They did not want to go ahead with this idea.

There was a clever minister in his court. He came to the king and said, " I have another idea. Instead of covering roads with leather, why don't we make shoes of leather and distribute it to everyone."

The king really liked the idea. He immediately ordered that leather shoes be made for everyone. He too started wearing shoes from that day.

Kazi Shama Praveen Kabir Ahmed

AMC School Silkmill Colony, Aurangabad.

Python and Rama

Long long ago, there was a village named Shantiwadi. Many farmers lived there.

They used to go to their farms in the morning and work hard in the farm. Because of their honest work, they were earning very well.

One day a dangerous python came and made his home behind a huge Banyan tree. The python would eat goats, hens and dogs. It troubled the farmers by eating the calves of their cows, goats etc. Farmers were very scared of the python. They stopped going to their farms. Their crops also started dying.

Among the farmers of Shantiwadi there was a brave man named "Rama". He decided to kill the python.

He discussed this with the villagers. They told him not to go to the farm. "If you go to the farm, the python will eat you," one farmer said.

But Rama was brave. He had a plan in his mind. He asked them for one long thick wood. Then Rama tied a piece of flesh to one side of the wood and carried it to the farm. He went near the banyan tree where the python lived and kept fleshy side of the wood towards the python.

The python saw the flesh and came out of his hiding place. Rama moved farther from the place. The python was hungry. It quickly took in his month the wood from the side where flesh was tied. In hurry, the dangerous python swallowed

the whole long, thick wood completely. As a result, it was unable to move at all. He tried to move away in a zig-zag manner but it could not do so. The more he tried, the more python's body got torn. After some time, the python died.

Rama went to Shantiwadi and told the news to farmers. They were delighted and praised him for his courage. Now they had nothing to worry. They started going to in the farms again.

Manoj Agrawal

AMC School, Harsool,

Plastic Ban

11 year old Sonali came home as usual. She was looking worried. Mother understood that something in school has made her little angel upset.

"What happened Sonu ? Why are you upset ?", mother asked at once.

Throwing her school bag on the sofa, Sonu replied. "This is not fair Mummy. How can the Government order us to stop using plastic ? Our teacher said that there is 'Plastic Bandi' (ban) from tomorrow."

Her mother smiled. Offering Sonu a plate of Chiwda, her favourite snack, she said, "See Sonu, this a right decision. Also all types of plastic is not banned. We must support this move."

Sonu grabbed the plate in a hurry and said, "Plastic is so useful, then what is the point of plastic bandi ?"

Sitting near her daughter, the mother explained, "Sonu, plastic is causing a lot of pollution everywhere. Also, it doesn't get decomposed easily."

"Decompose ? What does it mean ?", Sonu questioned her mother.

Mother thought for a while and said, "Let's do an experiment. Come !". Holding a piece of paper

and a plastic straw in her hands, mother asked Sonu to come in the balcony. There were many flowerpots kept there. Mother burried both the things in the soil in different pots and said, "We will have a look at them after a week".

After that, everday Sonu would to go in the balcony and stare at the soil in the pots. Finally after one week, mother said, "Sonu, dig the soil in both the pots and give me back the paper piece and the straw".

Sonu dug the soil. She found the plastic straw but could not find the paper piece. She said, "Mummy, newspaper piece is not here, it is looking like a jelly ball."

Mother smiled and said, "You see the paper has been decomposed but not the plastic straw. Plastic will take hundreds of years to get dissolved. This is "decomposition". Just imagine if we use plastic without any thought, the earth would be filled with plastic garbage everywhere. Animals on earth, fishes in water who accidently eat plastic would die. Plastic would also choke the drainage rivers. Air would get polluted because of plastic burning. Also do you know it is dangerous to eat things kept in low quality plastic."

Sonu was listening very carefully. Mother continued, "But all types of plastics are not

banned. Bags which are very thin are banned."

"We should use cotton bags for shopping, buying vegetables etc. We can carry our own water bottles and avoid packed water."

Listening to her mother, Sonu immediately said, "Yes Mummy. Now I have understood. But all of us should follow this. Let's start it from today."

Smt. Dahiphale Nirmala M.

Asst. Teacher, AMC School, Mitmita

माझ्या स्वप्नातील औरंगाबाद शहर

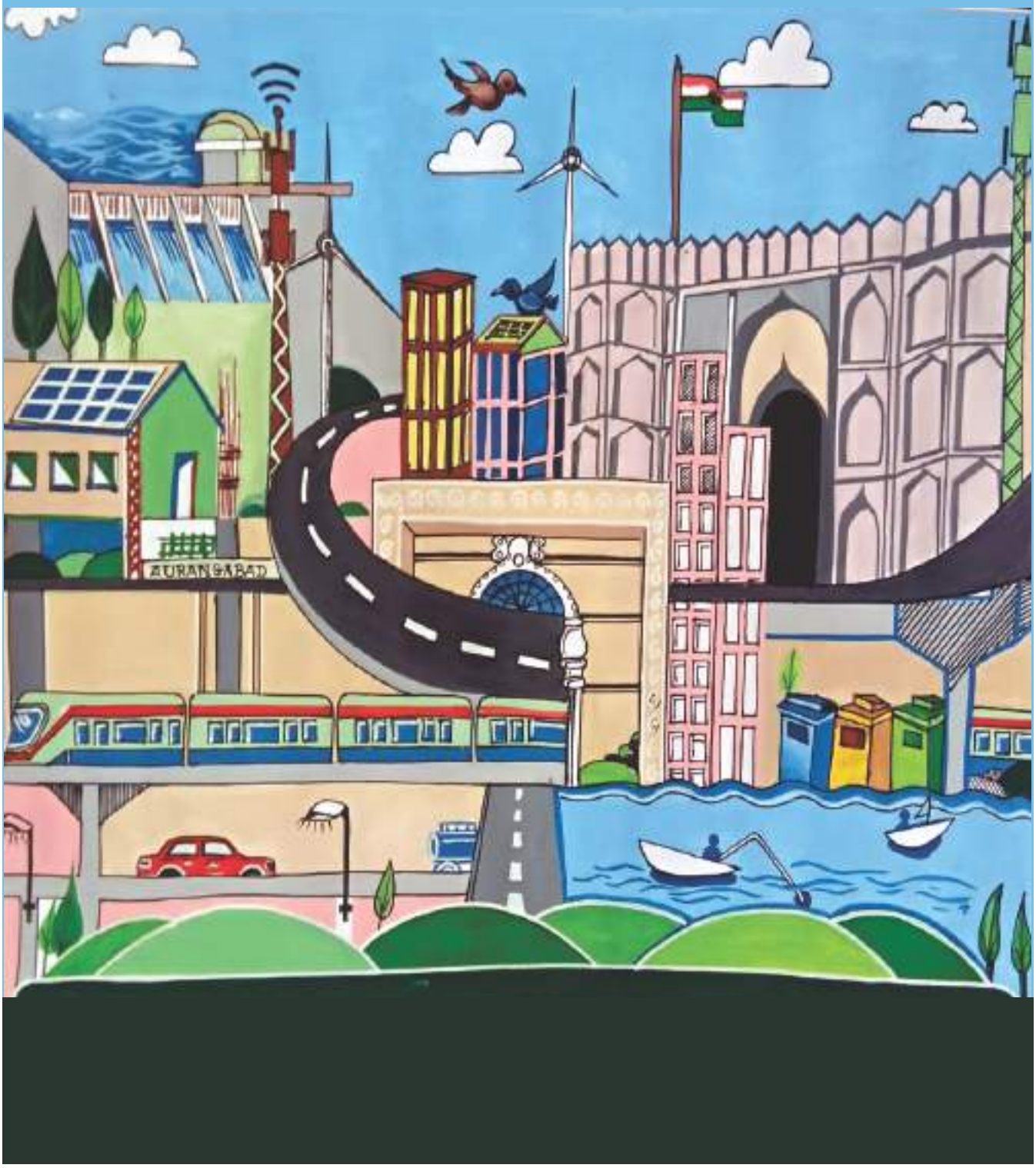

मुठभर गोष्टी

औरंगाबाद महानगरपालिका, औरंगाबाद

समग्र शिक्षा अभियान-शिक्षण विभाग